परमार वंश (888 ई लगभग) → कनकपाल ने स्थापना की

↓

गोरखा शासन (1804 – 1815) तक

↓

परमार वंश (1815 से – टिहरी रियासत)

1815 में टिहरी वंश की स्थापना

↓

सुदर्शन शाह → 1815 → टिहरी वंश (रियासत

↓

अंग्रेजों की मदद से गोरखाओं से गढ़वाल वापस लिया।

(*) अंग्रेज अलकनन्दा नदी को आधार मानकर पूर्वी भाग (अंग्रेजों ने)

अलकनन्दा नदी के पश्चिमी भाग पर टिहरी वंश की स्थापना हुयी।

1815 में टिहरी रियासत का पहला व परमार वंश का 55 वाँ शासक

* सुदर्शन शाह →
  * इन्होंने टिहरी में त्रिखण्डीय भवन बनवाया।
  * 1818 से शुरू हुआ 1848 में बनकर पूरा हुआ।

* सुदर्शन शाह ने सभासार ग्रंथ की रचना की थी।

  ये सात खण्डों में रची गयी है।

सुदर्शन शाह → विद्वान थे व इनके राजकवि → हरिदत्त शर्मा
↓
इनके ऊपर एक काव्य → सुदर्शनोदय काव्य लिखा गया।
↓
कवि कुमुदानन्द ने लिखा

(*) मोलाराम तोमर ने — सुदर्शनदर्शन में सुदर्शन शाह का वर्णन किया है।

(*) 1857 की क्रान्ति के समय → सुदर्शन शाह ने अंग्रेजों की मदद की थी।

Reason — 4 मार्च 1820 में (सुदर्शनशाह B/w अंग्रेज) सन्धि हुयी

Result → सन्धि में तय हुआ कि — टिहरी पर हमेशा सुदर्शनशाह के वंशजों का अधिकार होगा, इसके बदले टिहरी वंश हमेशा मुश्किल घड़ी में अंग्रेजो का साथ देंगे।

* समासार ग्रंथ के (ब्रज) 7 खण्डों में से — 3 खण्ड — डा० खुशीर सिंह के पास है।

3 खण्ड — टिहरी गढ़वाल की राजकीय पुस्तकालय में

1 खण्ड — टिहरी के नेलचामी के जीवानन्द नौटियाल के पास है।

* 1857 की क्रान्ति के समय अंग्रेजों की मदद करने की वजह से ही खुश होकर ब्रिटिश सरकार ने सुदर्शन शाह को बिजनौर का क्षेत्र दे दिया था।

लेकिन सुदर्शन शाह चाहते थे कि — उन्हें (ब्रिटिश गढ़वाल व देहरादून दिया जाये)

* सुदर्शनशाह ने कमीण व सयाणा पद बनाया था।
  ↘ (Will Discuss)

↓

(सुदर्शन शाह के बाद →

↓

इनके दो पुत्र थे —
- भवानी शाह (बड़ा पुत्र)
- शेरशाह (छोटा पुत्र)

* कायदेनुसार टिहरी रियासत का अगला उत्तराधिकारी सुदर्शन शाह का बड़ा पुत्र था।

लेकिन शेरशाह (दोयम पुत्र) → भवानी शाह की गद्दी छीन लेता है।

शेरशाह जबरदस्ती गद्दी पर बैठता है — इसकी सूचना कुमाऊं कमिश्नर (हेनरी रैम्जे को) दी गयी।

* रैम्जे ने वापस सत्ता भवानी शाह (बड़ा पुत्र) को सौंपी,
* और शेरशाह को देश निकाला दे दिया।

② भवानी शाह → 56वाँ शासक →

↓

इनके शासनकाल में बारह आना बीसी भूमि व्यवस्था लागू की गयी।

(*) बारह आना बीसी व्यवस्था रैम्जे ने पूरे कुमाऊं सहित गढ़वाल पर लगाई थी।

(*) भवानी शाह का कार्यकाल 12 साल का था।

भवानी शाह के बाद → उनका उत्तराधिकारी

(प्रतापशाह) 57वाँ

1871 में गद्दी में बैठे।

* सबसे पहले अंग्रेजी शिक्षा की शुरुआत करने वाले प्रथम टिहरी नरेश।

* अपने नाम से → टिहरी में → प्रताप प्रींटिंग प्रेस खोली।

* रानी गुलेरिया के सलाह पर प्रताप शाह ने अपने शासनकाल में तीन कुप्रथाओं पर अन्त किया था। ① खेंण प्रथा → (बेगार प्रथा)

1885 → ② पाला प्रथा (दरबार में जाने वाला दूध दही, घी आदि)
③ बिशाह प्रथा (अन्न के रूप में लिया जाने वाला कर)

1883 में — प्रताप शाह ने → 8वीं तक की शिक्षा के लिये एक अंग्रेजी स्कूल की स्थापना की

(1873 में) → (भूमि व्यवस्था लागू की)
↳ (पैमाइश या ज्यूला पैमाइश)
ज्यूला — रस्सी

Next topic —

④ कीर्ति शाह —
↓
⑤ नरेन्द्र शाह —
↓
⑥ नरेन्द्र शाह —

प्रतापशाह के बाद

① प्रीतिशाह
② विचित्र शाह
③ सुदर्शन शाह

1892 — संरक्षिका

(कीर्तिशाह) ← M. imp ← 7

① (1886 से 1913 तक) → इनकी संरक्षिका (रानी गुलेरिया)

② टिहरी में नगरपालिका की स्थापना की (

③ बैंक ऑफ गढ़वाल की स्थापना की थी। → (किसानो के लिये)

1891 में कीर्तिशाह ने → प्रताप हाई स्कूल की स्थापना की।

(*) 1898 में कीर्तिशाह ने — टिहरी में घण्टाघर बनवाया। (→ महारानी विक्टोरिया के जन्म दिन पर)

1897 में कीर्तिशाह ने — नये राजभवन का निर्माण किया

(*) ब्रिटिश सरकार ने कीर्तिशाह को कम्पेनियन ऑफ इण्डिया की उपाधि दी थी।

1892 में → कीर्तिशाह का विवाह — नेपाल के प्रधानमंत्री की पोती के साथ हुआ। (नेपोलिया)

(*) (कमाण्डर स्टार ऑफ इण्डिया) की उपाधि मिली थी।

* कीर्तिशाह को → नाइट कमान्डर की उपाधि दी थी → अंग्रेजो ने

* कीर्तिशाह को → इंग्लैंड में 1900 ई. में 11 तोपो की सलामी दी गयी।

* मेयो कॉलेज में → कीर्तिशाह → 3 गोल्ड मेडल
(अजमेर) 11 सिल्वर मेडल मिले।

- (*) कीर्तिशाह ने → टिहरी में → हीवेट संस्कृत पाठशाला की स्थापना की थी।
- (*) कीर्तिशाह ने राजकीय विद्यालय श्रीनगर के छात्रावास बनाने के 13000 रुपये दान किये थे।
- (*) 1902 में कीर्तिशाह ने सर्वधर्म सम्मेलन का आयोजन किया।
- (*) इन्हीं के शासनकाल में स्वामी रामतीर्थ टिहरी में आये थे।

* उत्तरकाशी में → कुष्ठ आ, की स्थापना की थी।

* इन्होंने श्रीनगर से 5 km दूर पर कीर्तिनगर नामक शहर बसाया था।

* टिहरी में किसानों के लिये कृषि बैंक की स्थापना की।

* टिहरी में वैद्यशाला का । [illegible] करवाया।

* भक्त दर्शन ने – कीर्तिशाह को → राजर्षि की उपाधि दी थी।

*

(लॉर्ड लैंसडाउन) → 1888 — 1894 — (वायसराय - भारत)

10th वायसराय भारत

(Additional information)

लार्ड लैंसडाउन के कार्यकाल में 1893 में भारत - अफगानिस्तान (डूरंड रेखा खींची गयी)

✱ लार्ड लैन्सडाउन ने कीर्तिशाह की आगरा दरबार में घोषणा के समय (1892 में) तारीफ करते कहा था कि — भारत के सभी राजाओं को कीर्तिशाह से प्रेरणा लेनी चाहिये व उन्हें अपना आदर्श मानना चाहिये।

कीर्तिशाह की मृत्यु 25 Apr 1913 में हुयी।

Next topic → नरेन्द्र शाह

↓

मानवेन्द्र शाह

आज रात 10 बजे से इसका ऑफ टेस्ट होगा) Total mcq 200, time 2 hours

(Sakshi) ← (5 बजे – 6 बजे)

(1 Hour)

15 मिनट

Revision

(Reading) ← (Study)

Books

परीक्षावाणी

12 – 2 बजे

2

30

नरेन्द्र शाह → कीर्तिशाह के इकलौते पुत्र थे।

शिक्षा → मेयो कॉलेज (अजमेर)

1913 में गद्दी पर बैठे।

वास्तविक सत्ता – इनकी माता रानी नेपोलिया के हाथों में थी।

वास्तविक सत्ता में नरेन्द्रशाह 4 Oct 1919 में आये।

नरेन्द्रनगर की स्थापना की थी।

(*) नरेन्द्रशाह को गढ़वाल का शेर शाह सूरी कहते थे।

क्योंकि इन्होंने → { नरेन्द्रनगर से मुनि की रेती, मुनि की रेती से देवप्रयाग, देवप्रयाग से कीर्तिनगर } सड़के बनवायी

(*) नरेन्द्रनगर से टिहरी तक मोटर मार्ग बनवाया था।

① प्रताप हाई स्कूल को → इन्टरमीडिएट कॉलेज बनाया।

② लेन्सडाउन स्कूल को 4000 रुपये की सहायता दी थी।

③ कर्णप्रयाग स्कूल को 3000 रुपये की सहायता दी थी।

* 1933 में अपने पिता कीर्तिशाह की याद में BHU को 1 लाख रुपये एक मुश्त दिये थे।
(BHU – बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय)

* BHU में → सर कीर्तिशाह चेयर ऑफ इन्डस्ट्रियल केमिस्ट्री।

* नरेन्द्र शाह को ब्रिटिश सरकार ने गढ़वाली फौजी का लेफ्टीनेन्ट कर्नल बनाया था।

* नरेन्द्र शाह को सर की उपाधि दी थी। (K.C.S.I)

BHU ने इन्हें (L.L.D) की उपाधि दी (1937 में)

नरेन्द्रशाह शाह के शासनकाल के समय की प्रमुख घटनाएं —

① (1930 का रवांई काण्ड)

② 84 दिन की भूख हड़ताल के बाद 25 July 1945 को श्रीदेव सुमन की मृत्यु।

नरेन्द्र शाह के बाद

↓

उनका बेटा → मानवेन्द्र शाह → १९५८ में गद्दी पर बैठे।

↓

१९४९ में टिहरी राज्य का भारत में विलय हुआ।

(*) मानवेन्द्र शाह → ३ बेटियाँ १ बेटा

↓

सांसद → (BJP)

मानवेन्द्र शाह ने — 1938 में मेयो कॉलेज से डिप्लोमा

↓

इनके समय → ① सकलाना आन्दोलन
② बडियारगढ आन्दोलन
③ कीर्तिनगर आन्दोलन

आजाद पंचायतों का गठन हुआ।

कीर्तिनगर में नागेन्द्र सकलानी व मोलू सिंह की गोली लगने से मृत्यु हुयी - इसके बाद आन्दोलन उग्र हुआ।

Result → 16 Jan 1948 को आन्दोलनकारियों ने टिहरी राजधानी

पर कब्जा कर लिया।

तीन दिन तक पूरी राज्य व्यवस्था – किसान मेला (दौलतराम कुकसाल) ने सम्भाली।

(क) 1952 में → मानवेन्द्र शाह की राजमाता – कमलेन्दुमती शाह (सांसद बनी)

(B.J.P)

↓

1957 में → (कांग्रेस) – लालद मानवेन्द्र शाह

1962

1967

पहली बार पृथक उत्तराखण्ड की मांग – 1952 में

↓

मानवेन्द्र शाह ने की थी।

(*) Additional information

↓

वर्तमान में लोकसभा सांसद

↓

1. अल्मोड़ा – श्री अजय टम्टा
2. पौड़ी ← श्री अनिल बलूनी
3. हरिद्वार ← श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत
4. U.S. नगर ← अजय भट्ट
5. Tehri garhwal → श्रीमती माला राजलक्ष्मी शाह

(Next topic) → (Class test)

↓ (Next topic) → (30 min) Revision

(गोरखा शासन)

मानवेन्द्र शाह → 8 बार सांसद रहे।

2nd, 3rd, 4th, 10th, 11th, 12th, 13th, 14th,